

# CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/2/3

## Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

### सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक होते हैं। यदि प्रकाशक नहीं हों, तो लेखकों की कृतियों को लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत कौन करेगा और यदि लेखक नहीं हों, तो प्रकाशन के व्यवसाय की शुरुआत कैसे हो, प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो ?

यह सत्य है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है, लेकिन तने के विस्तार को सब लोग देखते हैं और मूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है। प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर, शानशौकत अब सभी प्रमुख नगरों में हम देख सकते हैं। पर बेचारे लेखक को हम ढूँढने से ही पा सकते हैं।

इस स्वाभाविक स्थिति की विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है। मूल और तने के बीच का तनाव कभी सुफल नहीं ला सकता। इस विषम स्थिति से निकलने के लिए दोनों को यह सोचना होगा कि सामंजस्य कैसे स्थापित हो ?

सोचना इसलिए भी जरूरी है कि कुछ लोग इस तनाव को बढ़ाने की ही दिशा में काम करते नज़र आ रहे हैं। वे लेखक से कहते हैं, देखो, तुम्हारा कितना शोषण हो रहा है, ये प्रकाशक जोंक हैं जोंक। इनसे बचो। और प्रकाशक से कहा जाता है, अजी साहब, इस लेखक को जानता कौन था ? यह तो आप हैं, जिसने इसे आसमान पर चढ़ाया !

तनाव बढ़ता जा रहा है। दोनों की हानि हो रही है। यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। अतः इस पर चिंतन करना अनिवार्य है।

[10 अंक]

1(i). लेखक और प्रकाशक के बीच परस्पर कैसा संबंध है ?

[1 अंक]

- (A) फूल और पत्ते जैसा
- (B) मूल और तने जैसा
- (C) फल और शाखा जैसा
- (D) कली और फूल जैसा

सही उत्तर: (B) मूल और तने जैसा

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त मूल और तने का रूपक लेखक तथा प्रकाशक की परस्पर निर्भरता को स्पष्ट करता है।
- किसी उपमा का चयन करते समय गद्यांश के प्रत्यक्ष शब्द ही निर्णायक आधार होते हैं।

**चरण 1: रूपक का आधार पहचानिए** गद्यांश स्पष्ट कहता है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है। लेखक रचना का स्रोत है, जबकि प्रकाशक उसे पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। जैसे मूल और तना एक ही वृक्ष को बनाए रखते हैं, वैसे ही दोनों मिलकर साहित्य के प्रसार में योगदान देते हैं।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कीजिए** विकल्प (A) का फूल और पत्ते वाला संबंध गद्यांश में नहीं दिया गया है। विकल्प (C) में फल और शाखा तथा विकल्प (D) में कली और फूल की तुलना भी अनुपस्थित है। इनकी अपेक्षा मूल और तने का संबंध सीधे लेखक के कथन से प्रमाणित होता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** लेखक और प्रकाशक का संबंध मूल और तने जैसा है। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** उपमा वाले प्रश्न में पहले वह वाक्य खोजिए जिसमें दोनों व्यक्तियों की तुलना सीधे की गई हो।

1(ii). प्रस्तुत गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के बीच किस प्रकार का संबंध बताया गया है ?

[1 अंक]

- (A) परस्पर सहयोग का
- (B) पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का
- (C) पारस्परिक प्रेम का
- (D) पारस्परिक तनाव का

**सही उत्तर:** (D) पारस्परिक तनाव का

**हल:**

**अवधारणा:**

- गद्यांश का केंद्रीय प्रश्न लेखक और प्रकाशक के वर्तमान संबंधों में उत्पन्न तनाव है।
- आदर्श संबंध और वर्णित वास्तविक स्थिति में अंतर करना आवश्यक है।

**चरण 1: वर्णित स्थिति पहचानिए** लेखक और प्रकाशक पूरक अवश्य हैं, लेकिन गद्यांश उनकी विषम स्थिति से उत्पन्न तनाव पर केंद्रित है। वाक्य तनाव बढ़ता जा रहा है और दोनों की हानि हो रही है इस वास्तविक संबंध की पुष्टि करते हैं। सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता भी इसी तनाव के कारण बताई गई है।

**चरण 2: विकल्पों का मिलान कीजिए** विकल्प (A) का सहयोग वांछित स्थिति है, वर्तमान समस्या का वर्णन नहीं। विकल्प (B) की प्रतिस्पर्धा का उल्लेख नहीं है और विकल्प (C) के पारस्परिक प्रेम का भी कोई आधार नहीं मिलता। गद्यांश बार-बार तनाव और उससे होने वाली हानि की चर्चा करता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** प्रस्तुत गद्यांश में दोनों के बीच पारस्परिक तनाव का संबंध बताया गया है। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** पूरक होने के प्रारंभिक कथन के साथ पूरे अनुच्छेद का विषय भी देखिए; यहाँ बार-बार आया तनाव निर्णायक है।

1(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

**कथन :** प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट है।

**कारण :** लेखक को ढूँढना कठिन है जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि आसानी से दिखती है।

[1 अंक]

- (A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (B) कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता।
- (C) कथन सही है, कारण गलत है।
- (D) कथन गलत है, कारण सही है।

**सही उत्तर:** (A) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

**हल:**

**अवधारणा:**

- कथन और कारण का मूल्यांकन गद्यांश में दिए गए दृश्य संकेतों के आधार पर किया जाता है।
- दोनों के सत्य होने के बाद जाँचना चाहिए कि कारण कथन को समझाता भी है या नहीं।

**चरण 1: कथन जाँचिए** प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट होने का कथन सही है। गद्यांश में प्रकाशक को दिखाई देने वाले तने और लेखक को छिपे हुए मूल के समान बताया गया है। यहाँ स्पष्टता का आशय प्रकाशक की स्थिति का लोगों को अधिक दिखाई देना है।

**चरण 2: कारण जाँचिए** कारण भी सही है। प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर और शानशौकत नगरों में दिखाई देती है, जबकि लेखक को ढूँढकर ही पाया जा सकता है। यह तुलना गद्यांश में प्रत्यक्ष रूप से दी गई है।

**चरण 3: व्याख्या का संबंध समझिए** प्रकाशक के वैभव का आसानी से दिखना और लेखक का दृष्टि से ओझल रहना ही प्रकाशक की

स्थिति को अधिक स्पष्ट बनाते हैं। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) में व्याख्या से इनकार अनुचित है; (C) और (D) किसी एक सही बात को गलत बताते हैं।

**चरण 4: निष्कर्ष** कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (A) है।

**त्वरित सुझाव:** पहले दोनों बातों की सत्यता जाँचिए, फिर पूछिए कि दिखाई देने वाली समृद्धि अधिक स्पष्ट स्थिति का कारण कैसे बनती है।

#### 1(iv). गद्यांश के अनुसार 'वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है' – कौन भूमिष्ठ रहता है और क्यों ?

[1 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- मूल और तने के रूपक में मूल लेखक का तथा तना प्रकाशक का प्रतीक है।
- भूमिष्ठ रहने का भाव समाज की दृष्टि से छिपे रहने या अपेक्षित पहचान न मिलने से जुड़ा है।

**चरण 1: सर्वनाम का संदर्भ पहचानिए** वह का संबंध मूल से है, जिसके द्वारा लेखक का संकेत किया गया है। जैसे वृक्ष की जड़ भूमि के भीतर रहती है, वैसे ही रचना का मूल सर्जक लेखक लोगों की दृष्टि में कम आता है। यहाँ लेखक के सचमुच भूमि के भीतर रहने की बात नहीं कही गई है।

**चरण 2: छिपे रहने का कारण स्पष्ट कीजिए** लोगों का ध्यान तने के विस्तार, अर्थात् प्रकाशक के दिखाई देने वाले वैभव पर जाता है। उसकी अट्टालिका और मोटर दिखाई देती हैं, पर लेखक को ढूँढना पड़ता है। इसीलिए रचना का आधार होने पर भी लेखक और उसका योगदान सामान्यतः लोगों का ध्यान कम आकर्षित करते हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** भूमिष्ठ लेखक रहता है, क्योंकि मूल की भाँति उसका योगदान दृष्टि से ओझल रहता है और लोगों का ध्यान प्रकाशक के प्रत्यक्ष वैभव पर जाता है।

**त्वरित सुझाव:** वह का अर्थ तय करने के लिए पिछले वाक्य के मूल और लेखक को जोड़िए; भूमिष्ठ को रूपक के अर्थ में समझिए।

#### 1(v). लेखक और प्रकाशक दोनों कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं ? किन्हीं दो तर्कों द्वारा पुष्टि कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- पूरक होने का अर्थ है कि दोनों एक-दूसरे की भूमिका पूरी करते हैं और किसी एक के बिना कार्य अधूरा रहता है।
- गद्यांश लेखक को सृजन का आधार और प्रकाशक को उस सृजन के सार्वजनिक प्रसार का माध्यम बताता है।

**चरण 1: लेखक की निर्भरता का तर्क दीजिए** लेखक कृति की रचना करता है, लेकिन प्रकाशक उसे लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत करता है। प्रकाशक के न होने पर लेखक की रचना को पाठकों तक पहुँचाने का आवश्यक माध्यम नहीं मिलेगा। इसलिए रचना को सार्वजनिक पहचान और प्रसार देने में प्रकाशक की भूमिका महत्वपूर्ण है। गद्यांश का आरंभिक प्रश्न इसी आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

**चरण 2: प्रकाशक की निर्भरता का तर्क दीजिए** प्रकाशन-व्यवसाय की शुरुआत के लिए लेखक की लिखी हुई कृति चाहिए। यदि लेखक ही न हों, तो प्रकाशक के पास प्रकाशित करने के लिए रचनाएँ नहीं होंगी और उसके व्यवसाय का आधार समाप्त हो जाएगा। इसी कारण लेखक को मूल तथा प्रकाशक को तना कहा गया है; तना मूल से जुड़कर ही विकसित होता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** पहला, प्रकाशक लेखक की कृति को पाठकों के सामने लाता है। दूसरा, लेखक की रचनाएँ प्रकाशक के व्यवसाय का आधार बनती हैं। इसलिए दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

**त्वरित सुझाव:** दो तर्क अलग दिशाओं में लिखिए: प्रकाशक लेखक के लिए क्या करता है और लेखक प्रकाशक को क्या देता है।

1(vi). लेखक और प्रकाशक के बीच संबंधों में सुधार किस प्रकार आ सकता है ? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संबंधों में सुधार के लिए गद्यांश सामंजस्य स्थापित करने और तनाव पर चिंतन करने की आवश्यकता बताता है।
- तनाव बढ़ाने वाली बातों के स्थान पर परस्पर निर्भरता की समझ सहयोग का आधार बन सकती है।

**चरण 1: सामंजस्य और परस्पर महत्त्व स्वीकारिए** लेखक और प्रकाशक दोनों को समझना चाहिए कि उनका हित एक-दूसरे से जुड़ा है। लेखक रचना का मूल है और प्रकाशक उसके प्रसार का माध्यम। दोनों अपने योगदान के साथ दूसरे की आवश्यकता को भी स्वीकार करें तथा विषमता से उत्पन्न तनाव पर मिलकर विचार करें। इससे श्रेष्ठता का आग्रह घटेगा और सामंजस्य स्थापित करने की दिशा बनेगी।

**चरण 2: उकसाने वाली बातों से बचिए** गद्यांश में कुछ लोग लेखक को शोषण की बात कहकर और प्रकाशक को लेखक की प्रसिद्धि का सारा श्रेय देकर तनाव बढ़ाते हैं। दोनों को ऐसी बातों के प्रभाव में आकर परस्पर दूरी बढ़ाने के बजाय सीधे संवाद करना चाहिए। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि बढ़ता तनाव किसी एक का लाभ नहीं, दोनों की हानि करता है; इसलिए उसे दूर करना साझा आवश्यकता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** संबंध सुधर सकते हैं यदि दोनों परस्पर महत्त्व स्वीकार कर सामंजस्य पर विचार करें और उकसाने वालों से बचकर आपसी संवाद से तनाव दूर करें।

**त्वरित सुझाव:** सुधार के दोनों बिंदु गद्यांश की समस्याओं से निकालिए: विषमता का उत्तर सामंजस्य और उकसावे का उत्तर संवाद है।

1(vii). लेखक और प्रकाशक के संबंधों में दूरी बढ़ने के क्या कारण हैं ? इस दूरी के बढ़ने से क्या हानि हो रही है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दूरी के कारणों में दिखाई देने वाली असमान स्थिति और तनाव बढ़ाने वालों की भूमिका दोनों शामिल हैं।
- हानि का विवेचन लेखक और प्रकाशक की परस्पर निर्भरता को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

**चरण 1: दूरी बढ़ने के कारण बताइए** प्रकाशक का वैभव सबको दिखाई देता है, जबकि मूल सर्जक लेखक उपेक्षित और कम दिखाई देता है। इस स्थिति की विषमता उनके संबंधों में तनाव उत्पन्न करती है। कुछ लोग लेखक से कहते हैं कि प्रकाशक उसका शोषण करते हैं और प्रकाशक को यह विश्वास दिलाते हैं कि लेखक की सारी प्रसिद्धि उसी की देन है। इस प्रकार उकसावे से आपसी दूरी और बढ़ती है।

**चरण 2: दूरी बढ़ने की हानि स्पष्ट कीजिए** लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक हैं; उनके बीच तनाव बढ़ने से वह सहयोग कमजोर होता है जिस पर कृतियों का प्रकाशन और प्रसार आधारित है। गद्यांश स्पष्ट कहता है कि दोनों की हानि हो रही है और यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। इसलिए यह दूरी किसी एक पक्ष की समस्या नहीं, दोनों के हितों को नुकसान पहुँचाने वाली स्थिति है।

**चरण 3: निष्कर्ष** विषम स्थिति तथा दूसरों के उकसावे से दूरी बढ़ रही है। इससे दोनों का सहयोग और हित प्रभावित हो रहे हैं तथा लगातार बढ़ता तनाव दोनों को चौपट कर सकता है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर के दो हिस्से बनाइए: पहले विषमता और उकसावे के कारण, फिर दोनों की साझा हानि का परिणाम लिखिए।

## 2. जो नहीं हो सके पूर्ण-काम

मैं उनको करता हूँ प्रणाम

कुछ कुंठित औ' कुछ लक्ष्य-भ्रष्ट

जिनके अभिमंत्रित तीर हुए;

रण की समाप्ति के पहले ही

जो वीर रिक्त तूणीर हुए !

– उनको प्रणाम !

जो छोटी-सी नैया लेकर

उतरे करने को उदधि-पार;

मन की मन में ही रही, स्वयं

हो गए उसी में निराकार !

– उनको प्रणाम !

जो उच्च शिखर की ओर बढ़े

रह-रह नव-नव उत्साह भरे;

पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि

कुछ असफल ही नीचे उतरे !

– उनको प्रणाम !

एकाकी और अकिंचन हो

जो भू-परिक्रमा को निकले;

हो गए पंगु, प्रति-पद जिनके

इतने अदृष्ट के दाव चले !

– उनको प्रणाम !

कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;

प्रत्युत फाँसी पर गए झूल

कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी

यह दुनिया जिनको गई भूल

– उनको प्रणाम !

[8 अंक]

### 2(i). 'रिक्त तूणीर' होने का अभिप्राय है –

[1 अंक]

(A) अनुभवहीन

(B) विफल

(C) कुंठित

(D) साधनहीन

**सही उत्तर:** (D) साधनहीन

**हल:**

**अवधारणा:**

- शब्द का अर्थ उसके काव्यगत संदर्भ में समझना चाहिए।
- तूणीर तीर रखने का पात्र है; उसके रिक्त होने से युद्ध के साधनों का समाप्त होना व्यक्त होता है।

**चरण 1: पंक्ति से अर्थ स्पष्ट करें** कवि कहता है कि रण की समाप्ति से पहले ही वीरों के तूणीर रिक्त हो गए। तीर समाप्त होने से वे युद्ध जारी रखने के आवश्यक साधनों से वंचित हो गए। इसलिए यहाँ रिक्त तूणीर होने का संकेत साधनहीन होने की ओर है।

**चरण 2: विकल्पों की तुलना करें** (A) अनुभवहीन होना अनुभव की कमी है, तीरों की कमी नहीं। (B) विफलता प्रयास का परिणाम है; यहाँ साधन समाप्त होने की स्थिति बताई गई है। (C) कुंठित होने का उल्लेख अलग पंक्ति में है। (D) साधनहीन इस प्रतीक का सबसे सटीक अर्थ है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही विकल्प (D) साधनहीन है।

**त्वरित सुझाव:** तूणीर का शाब्दिक अर्थ पहचानकर देखें कि तीर समाप्त होने से वीर किस चीज से वंचित हुआ।

**2(ii). काव्यांश में 'हिम समाधि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?**

[1 अंक]

- (A) बर्फीले प्रदेश के कष्टों को झेलना  
(B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना  
(C) बर्फ जैसी श्वेत समाधि बनाना  
(D) बर्फ का ऊँचा शिखर चढ़ना
- सही उत्तर:** (B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना

**हल:**

**अवधारणा:**

- शब्द के साथ उसके पहले और बाद की पंक्तियाँ पढ़ने से सही आशय मिलता है।
- उच्च शिखर पर चढ़ने वालों के प्रसंग में हिम-समाधि मृत्यु का संकेत है।

**चरण 1: प्रसंग समझें** कुछ लोग उत्साह से ऊँचे शिखर की ओर बढ़े। उनमें से कुछ ने हिम-समाधि ले ली, जबकि कुछ असफल होकर नीचे लौट आए। इस विरोध से स्पष्ट है कि हिम-समाधि लेने वाले जीवित लौट नहीं सके और बर्फ के नीचे दबकर मर गए।

**चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें** (A) केवल बर्फीले प्रदेश के कष्ट झेलना मृत्यु का आशय नहीं देता। (C) श्वेत समाधि बनाना किसी निर्माण का वर्णन है, जो यहाँ नहीं है। (D) शिखर चढ़ना उनके प्रयास को बताता है, उसकी दुखद परिणति को नहीं। (B) पंक्ति का सही अर्थ व्यक्त करता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही विकल्प (B) बर्फ के नीचे दबकर मर जाना है।

**त्वरित सुझाव:** हिम-समाधि के अर्थ के लिए उसे असफल होकर नीचे लौटने वालों की स्थिति से मिलाकर पढ़ें।

**2(iii). 'छोटी-सी नैया' और 'उदधि-पार' का प्रतीकार्थ है –**

[1 अंक]

- (A) छोटी नाव, विशाल सागर  
(B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य  
(C) कम मेहनत, अधिक सफलता  
(D) छोटी नौका, बड़ा जहाज
- सही उत्तर:** (B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य

**हल:**

**अवधारणा:**

- प्रतीक किसी प्रत्यक्ष वस्तु के माध्यम से व्यापक भाव व्यक्त करता है।
- छोटी नैया साधनों की सीमा और समुद्र पार करना लक्ष्य की विशालता का संकेत है।

**चरण 1: दोनों प्रतीक समझें** छोटी-सी नैया में समुद्र पार करने निकलना कम साधनों के सहारे बहुत बड़े उद्देश्य की प्राप्ति का प्रयास है।

छोटी नैया साधनों की अल्पता दिखाती है और उदधि-पार करना कठिन तथा विशाल लक्ष्य को व्यक्त करता है।

**चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें** (A) छोटी नाव और विशाल सागर शाब्दिक अर्थ हैं, प्रतीकार्थ नहीं। (C) कम मेहनत और अधिक सफलता का भाव पंक्तियों में नहीं है; यहाँ कठिन संघर्ष है। (D) बड़े जहाज का कोई उल्लेख नहीं है। (B) सीमित साधन और विशाल लक्ष्य दोनों प्रतीकों का उचित अर्थ देता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही विकल्प (B) सीमित साधन, विशाल लक्ष्य है।

**त्वरित सुझाव:** प्रतीकार्थ पूछे जाने पर नाव और समुद्र के भौतिक अर्थ से आगे बढ़कर प्रयास की स्थिति पहचानें।

## 2(iv). कवि किन लोगों को प्रणाम कर रहा है ?

[1 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कविता में बार-बार आया प्रणाम संघर्षशील लोगों के प्रति सम्मान व्यक्त करता है।
- कवि सम्मान का आधार केवल सफलता को नहीं, साहस और त्याग को मानता है।

**चरण 1: संबोधित लोगों को पहचानें** कवि उन लोगों को प्रणाम कर रहा है जो बड़े उद्देश्य लेकर चले, पर अपने काम पूरे नहीं कर सके। किसी के साधन चुक गए, कोई समुद्र में डूब गया और कोई शिखर की चढ़ाई में प्राण गँवा बैठा अथवा असफल होकर लौट आया।

**चरण 2: सम्मान का आधार बताएँ** अकेले और निर्धन होकर संघर्ष करने वाले, प्रतिकूल भाग्य से पीड़ित लोग तथा फाँसी पर चढ़कर भुला दिए गए त्यागी भी कवि के सम्मान के पात्र हैं। उनके अधूरे लक्ष्य उनके साहस, संघर्ष और बलिदान का मूल्य कम नहीं करते।

**चरण 3: निष्कर्ष** कवि लक्ष्य पूरा न कर पाने वाले संघर्षशील, साहसी और त्यागी लोगों को प्रणाम कर रहा है।

**त्वरित सुझाव:** आरंभ की पूर्ण-काम वाली पंक्ति को बाद में आए संघर्ष और बलिदान के उदाहरणों से जोड़ें।

## 2(v). 'हो गए उसी में निराकार' कथन का क्या तात्पर्य है ? काव्यांश के आधार पर लिखिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- भावार्थ लिखते समय पंक्ति का संबंध उसके पूरे प्रसंग से जोड़ना चाहिए।
- निराकार होना यहाँ समुद्र में डूबकर जीवन और भौतिक अस्तित्व खो देने का संकेत है।

**चरण 1: प्रसंग स्पष्ट करें** काव्यांश में कुछ साहसी लोग छोटी-सी नाव लेकर समुद्र पार करने निकलते हैं। उनकी नाव छोटी है, जबकि सामने विशाल समुद्र है। यह सीमित साधनों के साथ कठिन और बड़े लक्ष्य को पाने के प्रयास का चित्र है। उनके मन में समुद्र पार करने की इच्छा थी, लेकिन वह इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

**चरण 2: कथन का आशय बताएँ** हो गए उसी में निराकार का तात्पर्य है कि वे समुद्र पार करने के प्रयास में उसी समुद्र में डूब गए और उनके प्राण चले गए। उनका भौतिक अस्तित्व समुद्र में विलीन हो गया तथा लक्ष्य पाने की अभिलाषा मन में ही रह गई। कवि उनकी असफलता पर उपहास नहीं करता, बल्कि उनके साहस और संघर्ष को प्रणाम करता है। इस कथन में अधूरी आकांक्षा और प्रयास के दौरान हुए जीवन के अंत का करुण भाव है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सीमित साधनों से समुद्र पार करने निकले साहसी लोग उसी में डूबकर प्राण गँवा बैठे; उनकी इच्छा अधूरी रह गई। यही निराकार होने का तात्पर्य है।

**त्वरित सुझाव:** उसी शब्द को पिछली पंक्ति के उदधि से जोड़ें; इससे विलीन होने का स्थान और कथन का आशय खुलता है।

**हल:****अवधारणा:**

- कविता में संघर्ष का मूल्य और संसार द्वारा मिलने वाली पहचान के बीच अंतर उभरता है।
- अंतिम पद में कृत-कृत्य न हो पाना, फाँसी और शीघ्र विस्मृति साथ रखे गए हैं।

**चरण 1: काव्यांश के संकेत देखें** कवि उन लोगों का उल्लेख करता है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने बड़े उद्देश्यों के लिए संघर्ष करते रहे। कुछ साधनों के अभाव में रुक गए, कुछ रास्ते में प्राण गँवा बैठे और कुछ अपने प्रयत्नों का फल देखे बिना फाँसी पर चढ़ गए। अंतिम पंक्तियों में कवि कहता है कि कुछ ही दिन बीतने पर दुनिया उन्हें भूल गई।

**चरण 2: भूलने का कारण समझाएँ** इससे संसार की संवेदनहीनता और सफलता को अधिक महत्त्व देने वाली प्रवृत्ति प्रकट होती है। जो अपना कार्य पूर्ण करके प्रत्यक्ष सफलता नहीं पा सके, उनके संघर्ष और बलिदान को संसार ने उचित पहचान नहीं दी। दुनिया ने उनके प्रयत्न की कठिनाई और त्याग को याद रखने के बजाय उन्हें शीघ्र भुला दिया। कवि का प्रणाम इसी उपेक्षा के विरुद्ध उन लोगों के प्रति सम्मान है; वह बताता है कि अधूरा लक्ष्य किसी के संघर्ष को मूल्यहीन नहीं बनाता।

**चरण 3: निष्कर्ष** दुनिया ने प्रत्यक्ष सफलता को महत्त्व देकर उनके कठिन संघर्ष और बलिदान की उपेक्षा की, इसलिए उन्हें शीघ्र भुला दिया। कवि उन्हें प्रणाम करके उनके त्याग का सम्मान करता है।

**त्वरित सुझाव:** कुछ ही दिन और दुनिया गई भूल को साथ पढ़कर संसार की उपेक्षा तथा कवि के सम्मान का अंतर स्पष्ट करें।

### 3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

“परंपरागत विषयों के बजाए नए विषयों पर लिखने का अभ्यास करने से अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार का पूरा लाभ मिलता है।” – कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[4 अंक]

**हल:****अवधारणा:**

- रचनात्मक लेखन में स्वतंत्र चिंतन, व्यक्तिगत अनुभव और मौलिक दृष्टि से विषय को अभिव्यक्त किया जाता है।
- नए विषय लेखक को रटे हुए विचारों से आगे बढ़कर अपनी कल्पना और भाषा का स्वतंत्र प्रयोग करने का अवसर देते हैं।

**चरण 1: प्रश्न का आशय समझना** यहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संबंध अपने विचारों को मौलिक ढंग से प्रस्तुत करने से है। परंपरागत विषयों पर तैयार सामग्री और प्रचलित कथन आसानी से मिल जाते हैं; इसलिए लेखक अनजाने में उनकी नकल कर सकता है। नए विषय पर उसे स्वयं सोचना, अनुभवों को खोजना और उपयुक्त भाषा चुननी पड़ती है। उदाहरण के लिए, किसी रोजमर्रा की वस्तु या अनुभव पर लिखते समय उसके ऐसे पक्ष सामने आ सकते हैं जिन्हें सामान्यतः अनदेखा कर दिया जाता है। इस अभ्यास में विषय का चयन, विचारों का क्रम और अभिव्यक्ति का ढंग लेखक स्वयं तय करता है। उत्तर में इसी प्रक्रिया को स्वतंत्रता के सार्थक उपयोग से जोड़ना आवश्यक है।

**चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर** परंपरागत विषयों पर लिखते समय प्रायः रटे हुए विचारों और तैयार अभिव्यक्तियों का सहारा लिया जाता है। नए विषयों पर लेखन का अभ्यास हमें स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने अनुभवों को नई दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित करता है। इससे कल्पनाशक्ति, निरीक्षण क्षमता तथा भाषा की सर्जनात्मकता विकसित होती है। लेखक प्रचलित धारणाओं से बँधे बिना अपनी अनुभूतियों, विचारों और दृष्टिकोण को मौलिक ढंग से व्यक्त करता है। इस प्रकार वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिक पूरा और सार्थक उपयोग कर पाता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** नए विषयों पर अभ्यास स्वतंत्र चिंतन, मौलिक दृष्टि और सर्जनात्मक भाषा को विकसित करके अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक उपयोग कराता है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में नए विषय, स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति का संबंध स्पष्ट करें; केवल अधिकार की परिभाषा न लिखें।

**3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :**

**कहानी के संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय नाटक के संवादों की विशेषताएँ लिखिए।**

[4 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- नाटक में संवाद पात्रों के कथन ही नहीं, कथानक को आगे बढ़ाने और चरित्र उभारने का प्रमुख साधन हैं।
- नाटकीय संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक, पात्रानुकूल और मंच पर प्रभावी ढंग से बोले जा सकने योग्य होने चाहिए।

**चरण 1: रूपांतरण की आवश्यकता पहचानना** कहानी में कथावाचक घटनाएँ, परिवेश और मनोभाव समझा सकता है, जबकि नाटक में इन्हें प्रायः संवादों और अभिनय से सामने लाना पड़ता है। इसलिए कहानी का वर्णन ज्यों का त्यों लंबे संवाद में बदलना उचित नहीं। पात्र के स्वभाव, सामाजिक स्थिति, परिस्थिति और दूसरे पात्र की प्रतिक्रिया के अनुसार बातचीत रचनी चाहिए। संवाद ऐसा हो कि दर्शक सुनकर स्थिति समझ सके और पात्रों के संबंध पहचान सके। प्रश्नोत्तर और प्रतिक्रियाओं का क्रम बातचीत को जीवंत बनाता है। कथावाचक की व्याख्या के स्थान पर पात्रों की क्रिया और कथन से बात स्पष्ट होनी चाहिए। मंच पर बोले जाने के कारण भाषा की सहजता और संवाद की गति विशेष महत्त्व रखते हैं।

**चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर** कहानी के नाट्य रूपांतरण में संवाद संक्षिप्त, सहज, स्वाभाविक और बोलचाल के अनुकूल होने चाहिए। उनकी भाषा पात्रों की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्थिति तथा स्वभाव के अनुरूप हो। वे कथा को आगे बढ़ाएँ, पात्रों के चरित्र और मनोभाव प्रकट करें तथा नाटकीय द्वंद्व को उभारें। संवादों में अनावश्यक विस्तार, दोहराव और लंबे वर्णन से बचना चाहिए। एक संवाद से दूसरे संवाद का स्वाभाविक संबंध बने। वे अभिनय योग्य हों तथा स्वर, विराम और हावभाव के साथ मंच पर प्रभाव उत्पन्न कर सकें।

**चरण 3: निष्कर्ष** नाटक के संवाद पात्रानुकूल, संक्षिप्त, स्वाभाविक, अभिनय योग्य और कथानक तथा नाटकीय द्वंद्व को विकसित करने वाले होने चाहिए।

**त्वरित सुझाव:** विशेषताएँ लिखते समय भाषा, पात्र, कथानक और मंचीय प्रभाव को जोड़ें; कहानी का विवरण संवाद में ज्यों का त्यों न दोहराएँ।

**3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :**

**रेडियो नाटक की अवधि छोटी तथा पात्र संख्या कम क्यों होती है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

[4 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों और घटनाओं को आवाज़, संवाद तथा ध्वनि प्रभाव से पहचानता है।
- सीमित अवधि और कम पात्र कथानक की एकाग्रता, स्पष्टता तथा श्रोता की रुचि बनाए रखते हैं।

**चरण 1: माध्यम की सीमा समझना** रेडियो पर मंच, वेशभूषा, चेहरे या हावभाव दिखाई नहीं देते। इसलिए दृश्य परिवर्तन और पात्रों का परिचय भी ध्वनियों तथा संवादों से देना पड़ता है। बहुत लंबी कथा या अनेक समान आवाज़ें श्रोता को उलझा सकती हैं। उत्तर में अवधि और पात्र संख्या, दोनों के पीछे का कारण स्पष्ट करना आवश्यक है। ध्वनि प्रभाव वातावरण का संकेत दे सकते हैं, किंतु वे दृश्य माध्यम की तरह एक साथ अनेक पात्रों की पहचान नहीं करा सकते। इसीलिए कम पात्रों को अलग बोलचाल, स्वर और संबोधन देना उपयोगी है। छोटी अवधि में अनावश्यक प्रसंग हटाकर आरंभ, संघर्ष और अंत को सघन रखा जाता है। ये सीमाएँ नाटक की प्रभावशीलता बढ़ाती हैं; उनका अर्थ यह नहीं कि रेडियो पर कथा या भावनाएँ व्यक्त नहीं हो सकतीं।

**चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर** रेडियो नाटक केवल सुनकर समझा जाता है, इसलिए उसकी अवधि छोटी रखी जाती है। लंबा नाटक श्रोता का ध्यान भटका सकता है; सीमित समय में एक मुख्य घटना पर केंद्रित कथानक उसकी रुचि बनाए रखता है। पात्र दिखाई नहीं देते, उनकी पहचान आवाज़ और संवादों से होती है। अधिक पात्र होने पर आवाज़ों की पहचान तथा आपसी संबंध समझने में भ्रम हो सकता है। अतः कम पात्रों और संक्षिप्त, प्रभावी संवादों से कथा स्पष्ट, रोचक और सहज बोधगम्य बनती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** छोटी अवधि ध्यान और कथानक की एकाग्रता बनाए रखती है; कम पात्र आवाज़ों की पहचान सरल बनाकर भ्रम से बचाते हैं।

**त्वरित सुझाव:** अवधि का कारण श्रोता के ध्यान से और पात्र संख्या का कारण आवाज़ों की पहचान से जोड़कर लिखिए।

**4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :**

**अखबार या पत्रिका के प्रकाशन के संदर्भ में 'डेडलाइन' से क्या आशय है ?**

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- अखबार या पत्रिका का प्रकाशन समयबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें सामग्री जुटाने से छपाई तक कई चरण होते हैं।
- डेडलाइन सामग्री या निर्धारित काम को पूरा करने की अंतिम समय सीमा है।

**चरण 1: अर्थ और उद्देश्य पहचानना** समाचार लिखने, संपादित करने, पृष्ठ तैयार करने और छापने के लिए निश्चित समय तय होते हैं। पत्रकार की डेडलाइन उस अंतिम समय को बताती है जिसके भीतर उसे अपना निर्धारित काम पूरा करके सामग्री सौंपनी है। यह पाठक को अखबार मिलने की तारीख मात्र नहीं है। अंतिम समय निकल जाने पर सामग्री तैयार होने के बावजूद उसी अंक में उसका समावेश कठिन हो सकता है; इसलिए डेडलाइन कार्य अनुशासन भी सुनिश्चित करती है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** अखबार या पत्रिका में समाचार, लेख आदि सामग्री तैयार करके सौंपने अथवा प्रकाशन से जुड़ा निर्धारित काम पूरा करने की अंतिम समय सीमा डेडलाइन कहलाती है। इसका पालन आवश्यक है, ताकि संपादन, पृष्ठ निर्माण और छपाई समय पर हो सकें।

**चरण 3: निष्कर्ष** डेडलाइन प्रकाशन संबंधी कार्य पूरा करने की निर्धारित अंतिम समय सीमा है।

**त्वरित सुझाव:** डेडलाइन की परिभाषा में अंतिम समय सीमा लिखकर उसका संबंध समय पर संपादन और छपाई से जोड़िए।

**4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :**

**ड्राई एंकर किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।**

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- टेलीविजन समाचार में एंकर समाचार का परिचय देता है; दृश्य या संवाददाता की रिपोर्ट बाद में जोड़ी जा सकती है।
- ड्राई एंकर में समाचार के साथ घटनास्थल के दृश्य या रिपोर्ट का प्रसारण नहीं होता।

**चरण 1: प्रस्तुति की विशेषता पहचानना** सामान्य टेलीविजन समाचार में एंकर के परिचय के बाद घटना के दृश्य, बयान या संवाददाता की रिपोर्ट दिखाई जा सकती है। ड्राई एंकर में ऐसा दृश्य सहारा नहीं होता। दर्शक स्टूडियो में समाचार पढ़ते एंकर को देखता है और सूचना उसी के कथन से प्राप्त करता है। यहाँ दृश्यहीनता से आशय घटना के दृश्यों का अभाव है; टेलीविजन पर एंकर स्वयं दिखाई देता है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** जब टेलीविजन पर एंकर किसी समाचार की जानकारी सीधे पढ़कर देता है और उसके साथ घटना के दृश्य, संवाददाता की रिपोर्ट या संबंधित बयान नहीं दिखाए जाते, तो इसे ड्राई एंकर कहते हैं। इसमें दर्शक केवल समाचार पढ़ते एंकर को देखता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** घटना के दृश्यों या रिपोर्ट के बिना एंकर द्वारा सीधे समाचार पढ़ना ड्राई एंकर है।

**त्वरित सुझाव:** ड्राई एंकर बताते समय एंकर की उपस्थिति और घटना के दृश्यों का अभाव, दोनों स्पष्ट कीजिए।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘हिन्दी वेब पत्रकारिता अभी शैशवकाल में है’ – कैसे ? उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- हिन्दी वेब पत्रकारिता की विकासावस्था का आकलन उसकी मौलिक सामग्री, तकनीकी सुविधाओं और पाठकवर्ग के आधार पर किया जाता है।
- प्रश्न का आशय पाठ्यपुस्तक में वर्णित स्थिति से है; उत्तर में उसी संदर्भ के कारण स्पष्ट करने चाहिए।

**चरण 1: शैशवकाल कहने के कारण पहचानें** प्रारंभिक हिन्दी वेबसाइटों में स्वतंत्र समाचार-संकलन की व्यवस्था कम थी। अधिकांश वेबसाइटें मुद्रित अखबार की सामग्री को इंटरनेट पर प्रस्तुत करती थीं। इससे वेब की तात्कालिकता और स्वतंत्र संपादकीय संभावनाओं का पर्याप्त उपयोग नहीं हो पाता था।

**चरण 2: तकनीकी और पाठकीय सीमाएँ जोड़ें** हिन्दी फॉन्ट तथा उनकी एकरूपता की समस्याएँ, इंटरनेट की सीमित पहुँच और कम विकसित पाठकवर्ग भी बाधाएँ थे। इसलिए केवल वेबसाइट उपलब्ध होना इस पत्रकारिता के पूरी तरह विकसित होने का प्रमाण नहीं माना गया।

**चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** हिन्दी वेब पत्रकारिता में मौलिक समाचार-संकलन और स्वतंत्र संपादकीय सामग्री का अभाव था। अधिकांश वेबसाइटें मुद्रित अखबारों की सामग्री प्रस्तुत करती थीं। फॉन्ट संबंधी कठिनाइयों, सीमित इंटरनेट पहुँच और छोटे पाठकवर्ग के कारण उसका विकास अभी प्रारंभिक अवस्था में था।

**चरण 4: निष्कर्ष** इन्हीं सामग्रीगत और तकनीकी सीमाओं के कारण हिन्दी वेब पत्रकारिता को शैशवकाल में बताया गया है।

**त्वरित सुझाव:** शैशवकाल समझाते समय केवल कम लोकप्रियता न लिखें; मौलिक सामग्री और तकनीकी बाधाओं के ठोस कारण भी दें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विश्लेषणात्मक रिपोर्ट क्यों तैयार की जाती है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट समाचार के तथ्यों के साथ उसके कारणों, पृष्ठभूमि और संभावित प्रभावों की व्याख्या करती है।
- इसका उद्देश्य पाठक को किसी घटना या समस्या की समग्र समझ देना है।

**चरण 1: साधारण समाचार से अंतर समझें** साधारण समाचार घटना की प्रमुख जानकारी देता है। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट उससे आगे बढ़कर पूछती है कि घटना क्यों हुई, किन परिस्थितियों में हुई और उससे कौन प्रभावित होगा। इसलिए इसमें संदर्भ और तथ्यों के आपसी संबंध आवश्यक होते हैं।

**चरण 2: पाठक के लिए उपयोगिता बताएँ** रिपोर्ट में प्रमाणित आँकड़ों, संबंधित पक्षों और विशेषज्ञों के विचारों की सहायता से जटिल विषय स्पष्ट किया जाता है। तथ्यों की व्याख्या पाठक को अपना विवेकपूर्ण मत बनाने में मदद करती है; इसे निराधार निजी राय नहीं बनना चाहिए।

**चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसी घटना या समस्या की पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों को स्पष्ट करने के लिए तैयार की जाती है। तथ्यों, आँकड़ों तथा विशेषज्ञों के विचारों से वह पाठकों को विषय की गहरी समझ देती है, जिससे वे विवेकपूर्ण राय बना सकें।

**चरण 4: निष्कर्ष** विश्लेषणात्मक रिपोर्ट का उद्देश्य समाचार के पीछे के कारणों और उसके व्यापक महत्व को स्पष्ट करना है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में घटना की सूचना के साथ क्यों और उसका प्रभाव क्या जैसे प्रश्नों की व्याख्या अवश्य जोड़ें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘एक पत्रकार की विशेषज्ञता उसके सूत्रों व स्रोतों पर भी निर्भर करती है।’ – कैसे ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- पत्रकार के सूत्र वे संपर्क हैं जिनसे उसे संबंधित क्षेत्र की विश्वसनीय और नवीन जानकारी मिलती है।
- दस्तावेज, अभिलेख, आँकड़े और विषय के जानकार भी समाचार की जाँच तथा गहराई के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

**चरण 1: सूत्रों से मिलने वाली सहायता बताएँ** किसी क्षेत्र के जानकारों और संबंधित व्यक्तियों से नियमित संपर्क पत्रकार को उस क्षेत्र की नई गतिविधियों तथा उनकी पृष्ठभूमि से परिचित कराता है। अच्छे सूत्र उसे ऐसी उपयोगी सूचनाएँ दे सकते हैं जिन तक सामान्य पहुँच आसान नहीं होती।

**चरण 2: सत्यापन से विशेषज्ञता जोड़ें** सूचना मिल जाना पर्याप्त नहीं है। पत्रकार दस्तावेजों, आँकड़ों और अन्य स्वतंत्र स्रोतों से उसकी पुष्टि करता है। स्रोतों की विविधता उसे पक्षपात से बचाती है और विषय के संबंधों को समझने में सहायता करती है; इसी से रिपोर्ट की विश्वसनीयता बढ़ती है।

**चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** विश्वसनीय सूत्र और स्रोत पत्रकार को अपने क्षेत्र की नवीन, प्रामाणिक तथा गहरी जानकारी देते हैं। विशेषज्ञों, संबंधित व्यक्तियों, दस्तावेजों और आँकड़ों से वह तथ्यों की पुष्टि करता है। विविध स्रोतों से निरंतर संपर्क उसकी समझ, विश्लेषण क्षमता और रिपोर्ट की विश्वसनीयता बढ़ाता है।

**चरण 4: निष्कर्ष** इस प्रकार विश्वसनीय सूत्रों और विविध स्रोतों का विकसित जाल पत्रकार की विषयगत विशेषज्ञता को मजबूत करता है।

**त्वरित सुझाव:** केवल अधिक संपर्क होने की बात न लिखें; विश्वसनीय सूचना, तथ्य-जाँच और विषय की गहरी समझ से संबंध स्पष्ट करें।

5(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रचनात्मक लेख में विषय का प्रभावशाली आरंभ, जीवन से जुड़े उदाहरण और सार्थक समापन होना चाहिए। शीर्षक विषय की केंद्रीय चिंता को स्पष्ट करता है।
- स्वास्थ्य को केवल बीमारी के अभाव तक सीमित न रखें; शारीरिक सक्रियता, संतुलित भोजन, पर्याप्त नींद और मानसिक शांति को परस्पर जोड़ें।

**चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति** शीर्षक देकर अनुच्छेद रूप में रचनात्मक लेख लिखना है। भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक रहे। केवल विचार गिनाने के स्थान पर उन्हें एक केंद्रीय भाव से जोड़ना चाहिए। परिचय, विस्तार और समापन का क्रम लेख को संगठित बनाएगा।

**चरण 2: विषय के अनुसार सामग्री की योजना** आरंभ में आधुनिक जीवन की गति का चित्र रखेंगे। फिर लंबे समय तक बैठने, मोबाइल के अत्यधिक उपयोग और अनियमित खानपान के प्रभाव बताएँगे। अंत में दैनिक जीवन में अपनाए जा सकने वाले छोटे सुधारों का सकारात्मक संकेत देंगे। लगभग 120 शब्दों की सीमा में विचारों का संतुलन बनाए रखना है।

**चरण 3: पूर्ण नमूना लेख** वर्तमान जीवन शैली और स्वास्थ्य

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल की घंटी और रात को सोने तक स्क्रीन की चमक! आज की जीवन शैली में सुविधाएँ बढ़ी हैं, पर शरीर की सक्रियता घट गई है। घंटों कुर्सी पर बैठना, जल्दी में भोजन करना और देर रात तक जागना हमारी दिनचर्या बनते जा रहे हैं। इसका असर शरीर के साथ मन पर भी पड़ता है। थकान, चिड़चिड़ापन और अकेलापन हमें घेरने लगते हैं। स्वास्थ्य बचाने के लिए बड़े संकल्पों से पहले छोटी आदतें बदलनी होंगी। रोज पैदल चलना, घर का संतुलित भोजन खाना, पर्याप्त पानी पीना और समय पर सोना उपयोगी शुरुआत है। परिवार से बातचीत तथा खेल के लिए भी समय निकालें। आधुनिकता तभी सार्थक है, जब उसकी दौड़ में हमारा स्वास्थ्य पीछे न छूटे।

**चरण 4: निष्कर्ष** लेख आधुनिक जीवन की सुविधाओं के साथ स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ दिखाता है और व्यवहार में लाए जा सकने वाले उपायों पर समाप्त होता है।

**त्वरित सुझाव:** लगभग 120 शब्दों में लिखते समय एक सजीव आरंभ, विषय से जुड़े दो या तीन बिंदु और भावपूर्ण अंतिम वाक्य पहले सोच लें।

**5(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :**

**स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान**

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- वर्णनात्मक रचनात्मक लेख में दृश्य, ध्वनियाँ, लोगों की गतिविधियाँ और उनसे जुड़ी अनुभूतियाँ विषय को सजीव बनाती हैं। वर्णन का केंद्र स्कूल के बाहर की स्टेशनरी की दुकान रहे।
- छोटी वस्तुओं और घटनाओं से बड़ा भाव उभर सकता है। पेंसिल, कॉपी और रंगों के माध्यम से बच्चों की पढ़ाई, उत्साह तथा कल्पना का संबंध दिखाया जा सकता है।

**चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति** शीर्षक देकर अनुच्छेद रूप में रचनात्मक लेख लिखना है। भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक रहे। केवल विचार गिनाने के स्थान पर उन्हें एक केंद्रीय भाव से जोड़ना चाहिए। परिचय, विस्तार और समापन का क्रम लेख को संगठित बनाएगा।

**चरण 2: विषय के अनुसार सामग्री की योजना** लेख का आरंभ छुट्टी की घंटी और दुकान पर उमड़ते बच्चों के दृश्य से करेंगे। बीच में स्टेशनरी की वस्तुओं, दुकानदार तथा बच्चों की बातचीत से वातावरण सजीव करेंगे। अंत में दुकान को सीखने और सपने सँजोने की जगह के रूप में देखेंगे। विषय से हटकर खरीदारी की लंबी सूची नहीं देनी है।

**चरण 3: पूर्ण नमूना लेख** स्कूल के बाहर स्टेशनरी की दुकान

छुट्टी की घंटी बजते ही स्कूल के सामने की छोटी स्टेशनरी की दुकान चहक उठती है। कोई नई पेंसिल माँगता है, कोई चार्ट पेपर और कोई नीली स्याही वाला पेन। काँच की अलमारी में सजे रंग ऐसे लगते हैं, मानो इंद्रधनुष छोटे डिब्बों में उतर आया हो। काउंटर के पीछे बैठे दुकानदार हर बच्चे की जल्दी पहचानते हैं। कभी खुल्ले पैसे खोजते हैं, कभी कॉपी पर कवर चढ़ा देते हैं। एक बच्चा अपनी बचत गिनकर मनपसंद रबर खरीदता है, तो दूसरा दोस्त को अपनी पेंसिल दे देता है। यहाँ केवल सामान नहीं बिकता; नई कक्षा का उत्साह और कल की तैयारी भी सँवरती है। इस छोटी दुकान से निकलती कॉपियों में न जाने कितने बड़े सपनों की पहली पंक्तियाँ लिखी जाती हैं।

**चरण 4: निष्कर्ष** दुकान का दृश्य बच्चों की गतिविधियों और आत्मीय वातावरण से सजीव हुआ है। अंतिम भाव स्टेशनरी को बच्चों की शिक्षा तथा सपनों से जोड़ता है।

**त्वरित सुझाव:** लगभग 120 शब्दों में लिखते समय एक सजीव आरंभ, विषय से जुड़े दो या तीन बिंदु और भावपूर्ण अंतिम वाक्य पहले सोच लें।

**5(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :**

**शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण**

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा आकर्षक आरंभ, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक समापन आवश्यक हैं।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के शैक्षिक उपयोगों के साथ विवेक, शिक्षक की भूमिका और विद्यार्थी की मौलिकता का विचार भी प्रस्तुत करना चाहिए।

**चरण 1: लेख की रूपरेखा** विषय है शिक्षा में ए.आई. का बढ़ता प्रयोग। आरंभ में कक्षा का बदलता दृश्य रखें। फिर व्यक्तिगत अभ्यास, कठिन विषयों की सरल व्याख्या तथा शिक्षकों को मिलने वाली सहायता के उदाहरण दें। आगे बिना जाँच उत्तर अपनाने और स्वयं सोचना

छोड़ देने की समस्या उठाएँ। अंत में जिम्मेदार उपयोग का संदेश दें। रचनात्मक लेख होने के कारण पत्र का पता, संबोधन अथवा औपचारिक समापन नहीं आएगा।

**चरण 2: विषय का संतुलित विस्तार** लेख में केवल लाभों की सूची देने के स्थान पर विद्यार्थी के अनुभव से बात आगे बढ़ाएँ। मशीन से तुरंत उत्तर मिलना सुविधाजनक है, पर सीखना तब होता है जब विद्यार्थी उत्तर का कारण समझता है। तकनीक से अभ्यास में मदद मिल सकती है; शिक्षक संवेदना, संदर्भ और मूल्यबोध देते हैं। यह संतुलन लेख को एकतरफा प्रशंसा बनने से बचाता है। सरल भाषा और छोटे वाक्य रखें।

**चरण 3: पूरा नमूना लेख** शिक्षा के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते चरण

कल तक कठिन प्रश्न लेकर विद्यार्थी शिक्षक की प्रतीक्षा करता था; आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता उसकी स्क्रीन पर सहायता लेकर उपस्थित है। शिक्षा का यह नया साथी कठिन अवधारणाएँ समझाता है, अभ्यास कराता है और सीखने की गति के अनुसार सामग्री देता है। शिक्षकों को भी पाठयोजना बनाने और विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ पहचानने में सहायता मिलती है। किंतु सुविधा तभी उपयोगी है जब विद्यार्थी स्वयं सोचना न छोड़े। बिना जाँचे उत्तर स्वीकार करना भ्रम बढ़ा सकता है। सभी बच्चों तक तकनीक की पहुँच और निजी जानकारी की सुरक्षा भी आवश्यक हैं। ए.आई. शिक्षक की संवेदना तथा मार्गदर्शन का स्थान नहीं ले सकती। उसका विवेकपूर्ण उपयोग शिक्षा को अधिक रोचक, सुलभ और प्रभावी बना सकता है। तकनीक हमारी सहायक बने, हमारी सोच की स्वामी नहीं।

**चरण 4: निष्कर्ष** लेख में शिक्षा में ए.आई. की उपयोगिता, आवश्यक सावधानियाँ और मानवीय मार्गदर्शन का महत्त्व क्रमबद्ध रूप में व्यक्त किया गया है।

**त्वरित सुझाव:** लगभग 120 शब्दों के लेख में एक सजीव आरंभ, दो उपयोग, एक सावधानी और जिम्मेदार उपयोग का समापन रखें।

**6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :**

‘छाई है घटा गगन में हलकी-हलकी’ ‘रुबाइयाँ’ में कवि ने इस पंक्ति का प्रयोग किस संदर्भ में किया है ? ‘घटा’ का बहन से क्या संबंध है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- फिराक की रुबाई में सावन के प्राकृतिक वातावरण और भाई-बहन के स्नेह का एक साथ चित्रण हुआ है।
- घटा और बिजली का साहचर्य राखी बाँधती बहन तथा उसके चमकते राखी के लच्छों के दृश्य को उभारता है।

**चरण 1: पंक्ति का प्रसंग समझें** यह पंक्ति रक्षाबंधन की सुबह का वातावरण प्रस्तुत करती है। सावन के आकाश में हलकी घटाएँ छाई हैं और बहन भाई को राखी बाँध रही है। इसलिए प्रसंग वर्षा का सामान्य वर्णन भर नहीं, भाई-बहन के त्योहार की उल्लासपूर्ण पृष्ठभूमि है।

**चरण 2: घटा और बहन का संबंध बताएँ** घटा में चमकती बिजली और बहन की राखी के चमकते लच्छों में दृश्य-साम्य है। सावन की घटाएँ रक्षाबंधन के आगमन का संकेत देती हैं। प्रकृति की चमक और बहन के स्नेह का उल्लास मिलकर घरेलू दृश्य को सुंदर बनाते हैं।

**चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** कवि ने यह पंक्ति सावन में रक्षाबंधन की सुबह के संदर्भ में कही है। घटाएँ त्योहार की पृष्ठभूमि बनाती हैं। घटा में बिजली चमकती है; वैसे ही भाई को राखी बाँधती बहन के राखी के लच्छे चमकते हैं। दोनों में उल्लासपूर्ण साहचर्य है।

**चरण 4: निष्कर्ष** यह रक्षाबंधन का प्रसंग है; सावन की घटा और बिजली का दृश्य बहन की चमकती राखी तथा उसके स्नेह का सौंदर्य उभारता है।

**त्वरित सुझाव:** पहले रक्षाबंधन का प्रसंग लिखें, फिर घटा की बिजली को राखी के चमकते लच्छों से जोड़ें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

उषा का जादू कैसा है ? यह जादू किस प्रकार टूट रहा है ? 'उषा' कविता के आधार पर लिखिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में सूर्योदय से पहले आकाश का बदलता रंग और सौंदर्य उषा का जादू है।
- सूर्योदय होते ही भोर की रहस्यमयी रंग-छटा का रूप बदल जाता है; इसे जादू टूटना कहा गया है।

**चरण 1: उषा के जादू का आशय** भोर में आकाश क्षण-क्षण नया रूप ग्रहण करता है। कभी नीले शंख, कभी राख से लीपे चौके और कभी केसर के रंग जैसा दृश्य बनता है। परिचित घरेलू उपमान इस अलौकिक लगते सौंदर्य को सजीव करते हैं। यही बदलती, सम्मोहक रंग-छटा उषा का जादू है।

**चरण 2: जादू टूटने का कारण** कविता के अंत में सूर्योदय हो रहा है। सूर्य के प्रकाश में पूर्व की धुंधली, कोमल और रहस्यमयी रंग-छवियाँ बदल जाती हैं। यहाँ जादू टूटने का अर्थ कोई विनाश नहीं, बल्कि भोर से दिन की ओर स्वाभाविक परिवर्तन है।

**चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** उषा का जादू प्रातःकालीन आकाश के क्षण-क्षण बदलते रंगों और मोहक सौंदर्य का है। नीले शंख, राख से लीपे चौके और केसर जैसे बिंब इसे सजीव करते हैं। सूर्योदय होते ही यह रहस्यमयी रंग-छटा बदलती है और उषा का जादू टूटता है।

**चरण 4: निष्कर्ष** उषा का जादू भोर की बदलती मोहक रंग-छटा है, जो सूर्योदय होने पर समाप्त हो जाती है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में भोर की बदलती रंग-छटा को जादू और सूर्योदय को जादू टूटने का स्पष्ट कारण लिखें।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'छोटा मेरा खेत' में वर्णित कविता की रचना प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- उमाशंकर जोशी कविता की रचना को खेती के रूपक से समझाते हैं। कागज़ खेत है और अनुभव से उपजा विचार बीज है।
- भावना, कल्पना और शब्दों के मेल से कविता विकसित होती है; उसका सौंदर्य और आनंद पाठकों के लिए अक्षय रहता है।

**चरण 1: खेती के रूपक को समझें** कवि का छोटा खेत कागज़ का पन्ना है। कोई भावनात्मक आवेग उसमें विचार का बीज डालता है। वह विचार कवि की कल्पना के सहारे अंकुरित होता है। इस प्रकार रचना का आरंभ बाहरी खेती से नहीं, मन में जन्मे अनुभव से होता है। वास्तविक खेती की फसल कटकर समाप्त हो जाती है, पर कविता का आस्वाद बार-बार लिया जा सकता है। यही रूपक की विशेषता है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** कागज़ के खेत में भावनात्मक आँधी से विचार का बीज पड़ता है। कल्पना उसे विकसित करती है; शब्दों के अंकुर फूटकर कविता बनते हैं। इससे अलौकिक रस का फल मिलता है, जिसकी अक्षय फसल पाठकों को बार-बार आनंद देती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** कविता का सृजन अनुभव के बीज, कल्पना के विकास और शब्दों की अभिव्यक्ति से होता है; उसका रस कभी समाप्त नहीं होता।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में कागज़-खेत, विचार-बीज, कल्पना-विकास और रस-अक्षय फसल का क्रम बनाए रखें।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“कविता एक खेल है बच्चों के बहाने” – कवि ने ऐसा क्यों कहा है ? ‘कविता के बहाने’ कविता के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कुँवर नारायण कविता और बच्चों के खेल में कल्पना, सहजता और सीमाओं से मुक्ति की समानता दिखाते हैं।
- कविता का संसार निजी सीमाओं से निकलकर सबको अपना बनाने वाला व्यापक मानवीय संसार है।

**चरण 1: कविता और खेल की समानता समझें** बच्चे खेलते समय घर, व्यक्ति और स्थान के भेद को स्थायी सीमा नहीं मानते। वे अपनी कल्पना से नया संसार रचते हैं। कविता भी केवल कवि के निजी अनुभव में बंद नहीं रहती; वह अलग-अलग जीवनो और संवेदनाओं को जोड़ती है। खेल का आनंद और कविता का आनंद दोनों सहज भागीदारी से बढ़ते हैं। बच्चे अपना और दूसरे का घर मिलाकर खेलते हैं; यह व्यवहार कविता की उदार मानवीय दृष्टि का संकेत है। कविता में किसी एक व्यक्ति की अनुभूति भी अनेक पाठकों की अनुभूति बन सकती है। इसलिए खेल का उल्लेख कविता को तुच्छ ठहराने के लिए नहीं, उसकी रचनात्मक स्वतंत्रता और व्यापकता बताने के लिए है।

**चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** कवि ने कविता को बच्चों के बहाने खेल कहा है, क्योंकि दोनों कल्पना की स्वतंत्र दुनिया रचते हैं। बच्चे खेलते हुए अपने-पराए और घरों के भेद भूलकर सबको शामिल करते हैं। कविता भी भाषा, स्थान और व्यक्ति की सीमाएँ लाँघकर सबकी संवेदनाओं से जुड़ती है। बच्चों के खेल की तरह उसका आनंद सहज, व्यापक और सबको अपनाने वाला होता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** बच्चों के खेल की कल्पनाशीलता, सहज आनंद और भेदरहित अपनापन कविता के स्वभाव को स्पष्ट करते हैं।

**त्वरित सुझाव:** केवल मनोरंजन न लिखें; बच्चों के खेल से कविता की सीमा-रहित कल्पना और सबको अपनाने की वृत्ति जोड़ें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता ‘व्यावसायिक दबाव के अंतर्गत एक व्यक्ति की संवेदनशीलता का प्रकटीकरण है।’ स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रघुवीर सहाय की कविता दूरदर्शन के कार्यक्रम में पीड़ित व्यक्ति के दुःख को प्रदर्शन की सामग्री बनाने पर व्यंग्य करती है।
- व्यावसायिक दबाव में संवेदना सहायता और सहानुभूति के बजाय दर्शक को भावुक करने का साधन बन जाती है।

**चरण 1: कथन का आलोचनात्मक आशय समझें** कविता का संचालक अपने कार्यक्रम को सामाजिक उद्देश्य वाला बताता है, किंतु दिव्यांग व्यक्ति से उसकी पीड़ा उगलवाने और उसे रूलाने की कोशिश करता है। वह उसकी असहजता और गरिमा की परवाह नहीं करता। कैमरे से भावपूर्ण दृश्य पकड़वाना और दर्शकों पर प्रभाव डालना उसके लिए अधिक आवश्यक है। इसलिए यहाँ संवेदनशीलता का प्रकटीकरण विकृत, प्रदर्शनकारी रूप में है। प्रश्न को साधारण सहानुभूति का उदाहरण मानना उचित नहीं होगा। संचालक का उद्देश्य पीड़ित को राहत देना नहीं, उसकी पीड़ा का ऐसा दृश्य तैयार करना है जो कार्यक्रम में प्रभाव पैदा करे।

**चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** कविता में कार्यक्रम संचालक दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा समझने के बजाय उसे कैमरे के सामने रूलाना चाहता है। सामाजिक उद्देश्य का दावा करते हुए भी वह उसके दुःख को दर्शकों की भावुकता जगाने का साधन बनाता है। प्रभावशाली कार्यक्रम बनाने का व्यावसायिक दबाव मानवीय संवेदना को कृत्रिम प्रदर्शन में बदल देता है। कवि इसी संवेदनहीन व्यवहार पर व्यंग्य करता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** व्यावसायिक दबाव में मानवीय दुःख का प्रदर्शन संवेदना का विकृत रूप बनता है; कविता इसी विरोधाभास को उजागर करती है।

**त्वरित सुझाव:** संचालक के सामाजिक उद्देश्य के दावे को उसके रूलाने वाले व्यवहार से जोड़कर व्यंग्य स्पष्ट करें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।” ‘कवितावली’ की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- तुलसीदास की उक्त पंक्ति जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं, अनासक्ति और सामाजिक निर्भीकता को व्यक्त करती है।
- माँगकर भोजन और मस्जिद में आश्रय का कथन जातिगत अभिमान तथा लाभ-हानि के सांसारिक संबंधों से मुक्ति का संकेत है।

**चरण 1: पंक्ति के दोनों अंश समझें** माँगकर खा लेने और मस्जिद में सो लेने की बात से कवि बताता है कि उसे वैभव या प्रतिष्ठित आश्रय की चाह नहीं है। किसी से एक लेना या दो देना नहीं है, अर्थात् वह सांसारिक लेन-देन और स्वार्थपूर्ण संबंधों में उलझना नहीं चाहता। रामभक्ति उसका आधार है; इसलिए लोगों की निंदा अथवा जाति संबंधी आक्षेप उसे विचलित नहीं करते। मस्जिद का उल्लेख धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठने की निर्भीकता भी दिखाता है। कवि किसी सामाजिक प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपने भक्तिपूर्ण जीवन को बदलने को तैयार नहीं है। इस कथन में दैन्य से अधिक आत्मनिर्भर मन और संतोष का स्वर है।

**चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** तुलसीदास कहते हैं कि वे माँगकर भोजन कर लेंगे और मस्जिद में सो रहेंगे। उन्हें धन, वैभव या विशेष आश्रय की आकांक्षा नहीं है। किसी से लेन-देन का स्वार्थ न होने के कारण वे सांसारिक बंधनों से मुक्त हैं। राम के भक्त के रूप में उन्हें लोगों की निंदा अथवा जातिगत आक्षेपों की चिंता नहीं। पंक्ति उनका स्वाभिमान और निर्भीकता प्रकट करती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** इस पंक्ति में तुलसीदास का संतोष, अनासक्त जीवन, रामभक्ति और लोकनिंदा के प्रति निर्भीक स्वाभिमान व्यक्त हुआ है।

**त्वरित सुझाव:** लेन-देन को केवल आर्थिक हिसाब तक सीमित न करें; उसे स्वार्थपूर्ण सांसारिक संबंधों से मुक्ति से जोड़ें।

8. तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुख की छाया –

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया –

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से

नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

[5 अंक]

8(i). पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता है ?

[1 अंक]

- (A) बादलों के गरजने का
- (B) बिजली के कड़कने का
- (C) पृथ्वी की आशाओं का
- (D) झरनों के गिरने का

**सही उत्तर:** (A) बादलों के गरजने का

**हल:**

**अवधारणा:**

- काव्यांश में कारण और प्रभाव का संबंध पंक्ति के शब्दों से स्पष्ट होता है।

- बादल की गर्जना सोई हुई जीवन-शक्ति को जगाती है।

**चरण 1: पंक्ति का साक्ष्य** कवि कहता है, 'घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर'। यहाँ 'से' कारण का सूचक है। बादलों की गर्जना सुनकर पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर सजग हो जाते हैं और नवजीवन की आशा से सिर उठाते हैं। अतः जागरण का प्रत्यक्ष कारण गर्जना है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण** बिजली के कड़कने और झरनों के गिरने का इस प्रसंग में उल्लेख नहीं है, इसलिए (B) और (D) गलत हैं। पृथ्वी की आशाएँ अंकुरों के नवजीवन से जुड़ी हैं; उन्हें जगाने वाली ध्वनि नहीं है, इसलिए (C) भी उपयुक्त नहीं है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही उत्तर (A) है : बादलों के गरजने का।

**त्वरित सुझाव:** कारण पूछे जाने पर पंक्ति में 'से' के साथ आए पद को ध्यान से पहचानिए।

**8(ii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि बादलों के विप्लवकारी रूप का आह्वान क्यों कर रहा है ?**

[1 अंक]

- (A) वातावरण को ठंडक देने के लिए
- (B) क्रांति लाने के लिए
- (C) वर्षा करने के लिए
- (D) बादलों को देखने के लिए

**सही उत्तर:** (B) क्रांति लाने के लिए

**हल:**

**अवधारणा:**

- बादल यहाँ सामाजिक परिवर्तन और विप्लव का प्रतीक है।
- काव्यांश का केंद्रीय उद्देश्य उसके संबोधन तथा बिंबों से समझा जाता है।

**चरण 1: संबोधन का आशय** कवि बादल को 'ऐ विप्लव के बादल' कहकर पुकारता है। 'रण-तरी' और 'भेरी-गर्जन' जैसे शब्द संघर्ष की तैयारी का वातावरण बनाते हैं। दग्ध जगत में नई आशाएँ जगाने के लिए इस क्रांतिकारी शक्ति का आह्वान किया गया है।

**चरण 2: विकल्पों की तुलना** ठंडक देना और वर्षा करना बादल के प्राकृतिक कार्य हैं, पर यहाँ (A) और (C) काव्यांश के क्रांतिकारी आशय को व्यक्त नहीं करते। केवल बादल देखने की इच्छा भी नहीं है, इसलिए (D) गलत है। परिवर्तन और नवजीवन का लक्ष्य (B) में व्यक्त है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही उत्तर (B) है : क्रांति लाने के लिए।

**त्वरित सुझाव:** 'विप्लव', 'रण' और 'भेरी' को साथ पढ़कर कविता का सामाजिक उद्देश्य पहचानिए।

8(iii). 'सुप्त अंकुर' का प्रयोग किस भावना/प्रक्रिया को प्रकट करता है ?

[1 अंक]

- (A) आलस्य और निराशा
- (B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ
- (C) बीज के समाप्त होने की प्रक्रिया
- (D) अंकुरित बीज के न बढ़ने की प्रक्रिया

**सही उत्तर:** (B) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

**हल:**

**अवधारणा:**

- काव्य में अंकुर नई जीवन-शक्ति और विकास की संभावना का प्रतीक हो सकता है।
- प्रतीक का अर्थ उसके आगे-पीछे की पंक्तियों के आधार पर निर्धारित होता है।

**चरण 1: प्रतीक का अर्थ** 'सुप्त' का अर्थ सोया हुआ है, समाप्त हुआ नहीं। 'सुप्त अंकुर' में ऐसी जीवन-शक्ति मौजूद है जो अभी प्रकट नहीं हुई। बादलों की गर्जना उसे जगाती है। आगे आए 'आशाओं से नवजीवन की' शब्द इस प्रतीक को सोई हुई आशाओं और संभावनाओं से जोड़ते हैं।

**चरण 2: अन्य अर्थों का निषेध** (A) केवल आलस्य और निराशा बताता है, जबकि अंकुर आशा से सिर उठाते हैं। (C) बीज की समाप्ति बताता है, जो नवजीवन के विपरीत है। (D) विकास रुकने की प्रक्रिया बताता है, जबकि यहाँ जागरण और विकास की संभावना है। इसलिए (B) सटीक है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही उत्तर (B) है : सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ।

**त्वरित सुझाव:** 'सुप्त' को मृत न समझें; 'नवजीवन' और 'आशा' से उसका प्रतीकात्मक अर्थ मिलाइए।

8(iv). 'प्लावित माया' को किस संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है ?

[1 अंक]

- (A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में
- (B) जल प्रलय के वर्णन के रूप में
- (C) वर्षा के कारण आप्लावित नदी के रूप में
- (D) शोषण रूपी अग्नि के रूप में

**सही उत्तर:** (A) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में

**हल:**

**अवधारणा:**

- बादल के क्रांतिकारी रूप में सामाजिक विषमता के विनाश का भाव निहित है।
- प्रतीकात्मक पद का आशय कविता के सामाजिक संदर्भ से ग्रहण करना चाहिए।

**चरण 1: प्रसंग में माया का अर्थ** यहाँ 'माया' धन-संपत्ति और उससे जुड़े वैभव की ओर संकेत करती है। 'निर्दय विप्लव' के साथ आया 'प्लावित' पद उस वैभव के क्रांति की बाढ़ में डूबने का भाव देता है। इस प्रकार शोषक वर्ग की संचित धन-संपत्ति का संदर्भ सामने आता है।

**चरण 2: विकल्पों का परीक्षण** (B) केवल जल-प्रलय का बाहरी दृश्य बताता है और (C) वर्षा से भरी नदी का शाब्दिक अर्थ लेता है; दोनों कविता के सामाजिक संकेत को छोड़ देते हैं। (D) में अग्नि का बिंब है, जबकि 'प्लावित' में डूबने का भाव है। इसलिए धन-संपत्ति वाला (A) उपयुक्त है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही उत्तर (A) है : शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में।

**त्वरित सुझाव:** 'माया' का अर्थ संदर्भ से चुनें; क्रांति के प्रसंग में धन और वैभव के संकेत पर ध्यान दें।

8(v). 'घन, भेरी-गर्जन' से कवि ने किसका बोध कराया है ?

[1 अंक]

- (A) आकाश में बादलों का मधुर संगीत
- (B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना
- (C) समुद्र की लहरों का संगीत
- (D) युद्ध में बजने वाले नगाड़ों की आवाज

**सही उत्तर:** (B) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

**हल:**

**अवधारणा:**

- भेरी युद्ध के अवसर पर बजाया जाने वाला नगाड़ा है।
- ध्वनि-बिंब का सांकेतिक अर्थ कविता के विप्लवकारी भाव से जुड़ा है।

**चरण 1: ध्वनि और उद्देश्य** कवि ने बादल की गर्जना को भेरी की ध्वनि के समान प्रस्तुत किया है। यह ध्वनि सुप्त अंकुरों को सजग करती है। 'रण-तरी' और 'विप्लव' के साथ पढ़ने पर यह युद्ध तथा क्रांति के लिए जगाने और प्रेरित करने वाली गर्जना बन जाती है।

**चरण 2: शाब्दिक और भावगत अर्थ** (A) मधुर संगीत और (C) समुद्र की लहरों का संगीत कहते हैं; इनमें संघर्ष का भाव नहीं है। (D) भेरी का शाब्दिक परिचय देता है, पर कवि के क्रांति-प्रेरक आशय को पूरा नहीं बताता। इसलिए प्रेरक गर्जना व्यक्त करने वाला (B) अधिक सटीक उत्तर है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही उत्तर (B) है : युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना।

**त्वरित सुझाव:** भेरी का केवल शब्दार्थ न चुनें; देखें कि उसकी ध्वनि अंकुरों में कौन-सी चेतना जगाती है।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“बाज़ार में एक जादू है।” इस कथन का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि इस जादू का सर्वाधिक असर कब होता है ?

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- जैनद्र कुमार का निबंध बाज़ार के आकर्षण और उपभोक्ता के मानसिक संयम का संबंध स्पष्ट करता है।
- बाज़ार का जादू आँखों के रास्ते मन को बाँधता है; उसकी तीव्रता मन की रिक्तता और खरीदने की सामर्थ्य से जुड़ी है।

**चरण 1: कथन का आशय** बाज़ार का जादू उसकी सजी हुई दुकानों और आकर्षक वस्तुओं का सम्मोहन है। वस्तुएँ देखकर व्यक्ति को अपना जीवन अधूरा और अपनी चीज़ें कम उपयोगी लगने लगती हैं। वह आवश्यकता से अधिक खरीदने को प्रेरित होता है। लेखक का संकेत विवेकहीन खरीदारी की ओर है।

**चरण 2: सर्वाधिक प्रभाव की स्थिति** लेखक के अनुसार जब भरी हो और मन खाली हो तो बाज़ार का जादू खूब चलता है। भरी जब खरीदने की सामर्थ्य देती है और खाली मन में वास्तविक आवश्यकता का निश्चित बोध नहीं होता। तब चमक-दमक के प्रभाव से अनेक अनावश्यक वस्तुएँ भी जरूरी लगती हैं। इसके विपरीत अपनी आवश्यकता जानने वाला व्यक्ति आकर्षण के बीच संयम रख सकता है।

**चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** बाज़ार का जादू उसकी आकर्षक सजावट और वस्तुओं की चमक-दमक का सम्मोहन है। यह आँखों के रास्ते मन को बाँधकर अनावश्यक चीज़ों को भी आवश्यक बना देता है। इसका सर्वाधिक असर तब होता है, जब जब भरी हो और मन खाली हो। खरीदने की सामर्थ्य तथा निश्चित आवश्यकता का अभाव व्यक्ति को बाज़ार के आकर्षण में फँसा देते हैं।

**चरण 4: निष्कर्ष** बाज़ार का जादू आवश्यकता से अधिक खरीदने का सम्मोहन है; भरी जब और खाली मन की स्थिति में वह सबसे अधिक प्रभावी होता है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में जादू का अर्थ बताने के बाद 'जब भरी और मन खाली' की स्थिति तथा उसका कारण अवश्य लिखिए।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘दंगल के दृश्य’ से लेखक का क्या अभिप्राय है ? इस दृश्य का लोगों पर किस तरह का प्रभाव पड़ता था ? ‘पहलवान की ढोलक’ कहानी के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- दंगल कुश्ती की सार्वजनिक प्रतियोगिता है, जिसमें पहलवान अपनी शक्ति, दाँव-पेंच और धैर्य दिखाते हैं।
- रेणु की कहानी में दर्शकों की सामूहिक उत्तेजना और ढोल की लय दंगल के वातावरण को जीवंत बनाती हैं।

**चरण 1: प्रसंग और आशय समझें** प्रश्न में दंगल के दृश्य और दर्शकों पर उसके प्रभाव, दोनों की चर्चा अपेक्षित है। कहानी में लुट्टन और चाँद सिंह की कुश्ती का प्रसंग इसका आधार है। पहलवानों की भिड़ंत, उनके दाँव-पेंच, ढोल की आवाज और दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ मिलकर पूरा दृश्य बनाते हैं। यहाँ दंगल का अर्थ किसी साधारण झगड़े से नहीं है। दर्शकों की भागीदारी को समझना आवश्यक है: वे केवल मौन होकर कुश्ती नहीं देखते, बल्कि अपनी आवाज और उत्साह से प्रतियोगिता का वातावरण बनाते हैं। उत्तर में कुश्ती की गतिविधियों और उसके भावात्मक प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट करने से प्रश्न के दोनों पक्ष पूरे होते हैं।

**चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** ‘दंगल के दृश्य’ से लेखक का अभिप्राय पहलवानों की कुश्ती, उनके दाँव-पेंच, ढोल की लय और दर्शकों की उत्साहपूर्ण प्रतिक्रियाओं से है। लुट्टन और चाँद सिंह की कुश्ती देखकर लोग रोमांचित हो उठते थे। वे तालियाँ बजाते, जयकार करते और अपने पक्ष के पहलवान का उत्साह बढ़ाते थे। जीत-हार की उत्सुकता उन्हें बाँधे रखती थी तथा पूरा वातावरण जोश से भर जाता था।

**चरण 3: निष्कर्ष** दंगल का दृश्य कुश्ती और जनसमूह के उत्साह का जीवंत चित्र है; उसका प्रभाव रोमांच, उत्सुकता और सामूहिक उल्लास के रूप में दिखाई देता था।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में पहले दंगल का दृश्य स्पष्ट करें, फिर दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ और उन पर पड़ा प्रभाव बताएँ।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘पैतृक पेशे’ से क्या अभिप्राय है ? ‘श्रम विभाजन और जाति-प्रथा’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- पैतृक पेशा वह व्यवसाय है जो व्यक्ति को उसके परिवार या पूर्वजों की परंपरा से मिलता है।
- आंबेडकर जन्म पर आधारित व्यवसाय-निर्धारण की आलोचना करते हैं, क्योंकि वह योग्यता, रुचि और पेशा बदलने की स्वतंत्रता रोकता है।

**चरण 1: पाठ का तर्क समझें** पाठ में श्रम-विभाजन और जाति द्वारा थोपे गए श्रमिक-विभाजन का अंतर स्पष्ट किया गया है। समाज को अलग-अलग कामों की आवश्यकता होती है, किंतु व्यक्ति का काम उसके जन्म के आधार पर स्थायी रूप से तय करना उचित नहीं है। पैतृक पेशे की चर्चा इसी बाध्यकारी व्यवस्था के संदर्भ में करनी चाहिए। यह आलोचना केवल किसी व्यवसाय को पारिवारिक रूप से सीखने की नहीं है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब जन्म के कारण वही काम करना बाध्यकारी हो और अन्य काम चुनने का अवसर न मिले। इसलिए उत्तर में पारिवारिक परंपरा के साथ जातिगत बाध्यता और उसके परिणाम अवश्य जोड़ने चाहिए।

**चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** ‘पैतृक पेशे’ का अर्थ वह व्यवसाय है जो व्यक्ति को अपने पिता या पूर्वजों से परंपरा में मिलता है। जाति-प्रथा में जन्म के आधार पर यही पेशा अपनाना अनिवार्य बना दिया जाता है। आंबेडकर के अनुसार यह व्यवस्था व्यक्ति की रुचि, योग्यता और क्षमता की उपेक्षा करती है। पेशा बदलने की स्वतंत्रता रोकने से बेरोजगारी बढ़ती है और समाज की आर्थिक प्रगति बाधित होती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** पैतृक पेशा पूर्वजों से मिला व्यवसाय है; उसे जन्म के आधार पर अनिवार्य बनाना व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक प्रगति के प्रतिकूल है।

**त्वरित सुझाव:** पैतृक पेशे का अर्थ देने के बाद जन्म, योग्यता और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता के संबंध को स्पष्ट करें।

**10.** कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा – ‘राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है।’ फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है। [5 अंक]

**10(i).** इस गद्यांश में किस प्रकार की अनासक्ति की बात की गई है ? [1 अंक]

- (A) सांसारिक सुखों से दूर रहने की  
(B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की  
(C) दुखद दृश्यों से दूर रहने की  
(D) सौंदर्य के बाहरी आवरण से प्रभावित होने की

**सही उत्तर:** (B) भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की

**हल:**

**अवधारणा:**

- अनासक्त भाव से रस ग्रहण करना इस गद्यांश का संबंधित बोध-बिंदु है।
- उत्तर चुनते समय गद्यांश के उदाहरण और उनके आशय को साथ पढ़ना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानें** कालिदास दुख और सुख, दोनों से भाव-रस ग्रहण करते हैं। गद्यांश का ‘अनासक्त कृषीवल’ वाला उदाहरण इसी निर्लिप्त ग्रहणशीलता को स्पष्ट करता है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) सांसारिक सुखों का त्याग यहाँ विषय नहीं है। (C) गलत है, क्योंकि कालिदास दुख से भी रस लेते हैं। (D) बाहरी आवरण पर रुकना बताता है, जबकि वे उसके भीतर पहुँचते हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** भाव-रसों को अनासक्त रूप से ग्रहण करने की बात है। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** विकल्प चुनते समय बाहरी उदाहरण और उसके भीतरी आशय में अंतर करें तथा गद्यांश के निर्णायक वाक्य से उत्तर मिलाएँ।

**10(ii).** ‘राजोद्यान का सिंहद्वार’ का उदाहरण देकर क्या समझाने का प्रयास किया गया है ? [1 अंक]

- (A) राजद्वार होने के कारण वह द्वार ही सब कुछ है।  
(B) वह द्वार इतना मजबूत है कि आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता।  
(C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।  
(D) अभ्रभेदी होने के कारण द्वार के पार नहीं जाया जा सकता।

**सही उत्तर:** (C) बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना।

**हल:**

**अवधारणा:**

- बाह्य सौंदर्य के पार पहुँचना इस गद्यांश का संबंधित बोध-बिंदु है।
- उत्तर चुनते समय गद्यांश के उदाहरण और उनके आशय को साथ पढ़ना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानें** रवींद्रनाथ का सिंहद्वार सुंदर और ऊँचा है, फिर भी वह अंतिम गंतव्य नहीं है। उसके पार जाना आवश्यक है। यह दृष्टांत बाहरी आकर्षण से आगे बढ़कर भीतरी सौंदर्य पहचानने की प्रेरणा देता है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) द्वार को ही सब कुछ मानता है, जो कथन के विपरीत है। (B) द्वार की मजबूती पर केंद्रित है। (D) पार जाना असंभव कहता है, जबकि गद्यांश आगे जाने को आवश्यक बताता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** बाह्य सौंदर्य के मोह से बचते हुए आंतरिक सौंदर्य को महत्त्व देना। अतः सही विकल्प (C) है।

**त्वरित सुझाव:** विकल्प चुनते समय बाहरी उदाहरण और उसके भीतरी आशय में अंतर करें तथा गद्यांश के निर्णायक वाक्य से उत्तर मिलाएँ।

**10(iii). कालिदास की सौन्दर्य-दृष्टि कैसी थी ?**

[1 अंक]

- (A) स्थूल और बाहरी
- (B) सूक्ष्म और संपूर्ण
- (C) अतिक्रम और अभ्रभेदी
- (D) अशक्त और निर्दलित

**सही उत्तर:** (B) सूक्ष्म और संपूर्ण

**हल:**

**अवधारणा:**

- कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि इस गद्यांश का संबंधित बोध-बिंदु है।
- उत्तर चुनते समय गद्यांश के उदाहरण और उनके आशय को साथ पढ़ना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानें** गद्यांश बताता है कि कालिदास सौंदर्य का बाह्य आवरण भेदकर भीतर तक पहुँचते थे। उनकी दृष्टि इसलिए सूक्ष्म है। वे दुःख और सुख, दोनों में भाव-रस ग्रहण करते हैं; इस व्यापक ग्रहणशीलता से उसकी संपूर्णता स्पष्ट होती है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) स्थूल और बाहरी दृष्टि गद्यांश के विपरीत है। (C) में दिए शब्द सिंहद्वार और उसके अतिक्रमण से जुड़े हैं, सौंदर्य-दृष्टि के गुण नहीं हैं। (D) के शब्द भी उनकी दृष्टि का वर्णन नहीं करते।

**चरण 3: निष्कर्ष** कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि सूक्ष्म और संपूर्ण थी। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** विकल्प चुनते समय बाहरी उदाहरण और उसके भीतरी आशय में अंतर करें तथा गद्यांश के निर्णायक वाक्य से उत्तर मिलाएँ।

**10(iv). 'फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है' – सिद्धांत से क्या अभिप्राय है ?**

[1 अंक]

- (A) वे प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाते हैं।
- (B) वे मनुष्य के जीवन से संबंधित हैं।
- (C) वे जीवन के असल प्रतीक हैं।
- (D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

**सही उत्तर:** (D) वे स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं।

**हल:**

**अवधारणा:**

- प्रकृति के संकेत का आशय इस गद्यांश का संबंधित बोध-बिंदु है।
- उत्तर चुनते समय गद्यांश के उदाहरण और उनके आशय को साथ पढ़ना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानें** 'वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है' वाक्य निर्णायक है। फूल और पेड़ केवल अपने दृश्य रूप तक सीमित नहीं हैं। वे किसी गहरे अर्थ की ओर संकेत करते हैं; इसलिए वे स्वयं में अंतिम नहीं हैं।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) प्राकृतिक सुंदरता बढ़ाने का सामान्य कथन है। (B) जीवन से संबंध बताता है, किंतु अंतिम न होने का अर्थ नहीं बताता। (C) उन्हें जीवन के असल प्रतीक कहता है; गद्यांश का सीधा जोर उनके आगे संकेत करने पर है।

**चरण 3: निष्कर्ष** फूल और पेड़ स्वयं में अंतिम नहीं होते हैं। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** विकल्प चुनते समय बाहरी उदाहरण और उसके भीतरी आशय में अंतर करें तथा गद्यांश के निर्णायक वाक्य से उत्तर मिलाएँ।

**10(v). गद्यांश के संदर्भ में 'निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकालने से' क्या अभिप्राय है ?**

[1 अंक]

- (A) सूखे हुए गन्ने से भी रस प्राप्त करना।
- (B) सामान्य वस्तु में भी सौंदर्य देखना।
- (C) असंभव को भी संभव बनाना।
- (D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

**सही उत्तर:** (D) वस्तु/व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना।

**हल:**

**अवधारणा:**

- भीतरी भाव-सौंदर्य की पहचान इस गद्यांश का संबंधित बोध-बिंदु है।
- उत्तर चुनते समय गद्यांश के उदाहरण और उनके आशय को साथ पढ़ना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानें** निर्दलित ईक्षुदंड से रस खींचने की उपमा कालिदास की भाव-रस ग्रहण करने की क्षमता बताती है। जैसे कृषक गन्ने से रस निकालता है, वैसे कवि बाहरी रूप के भीतर पहुँचकर भाव-सौंदर्य पहचानता है। संदर्भ में इसका अर्थ काव्यात्मक है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) उपमा को केवल गन्ने के वास्तविक रस तक सीमित करता है। (B) सामान्य वस्तु का सौंदर्य बताता है, किंतु भीतर के भाव-रस की बात अधूरी छोड़ देता है। (C) असंभव को संभव करने का अर्थ है, जिसका उल्लेख यहाँ नहीं है।

**चरण 3: निष्कर्ष** वस्तु या व्यक्ति के भीतरी भाव-सौंदर्य को पहचानना। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** विकल्प चुनते समय बाहरी उदाहरण और उसके भीतरी आशय में अंतर करें तथा गद्यांश के निर्णायक वाक्य से उत्तर मिलाएँ।

**11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :**

**‘पानी की बुवाई’ से जीजी का क्या अभिप्राय था ? ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ के संदर्भ में लिखिए।**

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- जीजी के कथन में पानी की बुवाई का अर्थ वर्षा के लिए थोड़ा पानी अर्पित करना है।
- खेती में बीज छोड़ने और प्रतिफल पाने के उदाहरण से जीजी त्याग तथा दान का महत्त्व समझाती हैं।

**चरण 1: प्रसंग और उपमा समझिए** अकाल के समय इंदर सेना पर पानी डालने को लेखक पानी की बरबादी मानता है। जीजी उसे समझाती हैं कि किसान भी अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास का बीज खेत में डाल देता है। वह बीज तत्काल उपयोग में नहीं आता, पर आगे उपज देता है। इसी समानता से जीजी बताती हैं कि पाने से पहले कुछ देना पड़ता है। उनके कथन का केंद्र लोकविश्वास के साथ दान की उदार भावना भी है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** जीजी के अनुसार इंदर सेना पर थोड़ा पानी डालना पानी की बुवाई है। जैसे किसान बीज बोकर अधिक अन्न पाता है, वैसे ही थोड़े पानी का दान करके लोग इंद्र से भरपूर वर्षा की आशा करते हैं। इसमें त्याग का भाव है।

**चरण 3: निष्कर्ष** जीजी पानी के दान को बीज बोने के समान मानती हैं; थोड़े त्याग के बदले वे व्यापक वर्षा की आशा व्यक्त करती हैं।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में बीज बोने और पानी दान करने की समानता बताकर जीजी के त्याग-संबंधी तर्क को स्पष्ट कीजिए।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि भक्तिन की निष्ठा और सेवा-भाव आज की जीवन-स्थितियों में भी प्रेरणादायक हो सकते हैं ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का सेवा-भाव केवल नौकरी निभाने तक सीमित नहीं है; उसमें आत्मीयता और संकट में साथ देने की भावना है।
- आधुनिक जीवन में पाठ के मूल्यों की उपयोगिता को उसके व्यवहार के ठोस उदाहरण से समझाना चाहिए।

**चरण 1: पाठ से आधार चुनिए** भक्तिन महादेवी वर्मा की सुविधा और भोजन का ध्यान रखती है तथा उनके प्रति गहरी आत्मीयता अनुभव करती है। आर्थिक कठिनाई और जेल जाने की आशंका जैसे प्रसंगों में भी वह उनका साथ छोड़ने को तैयार नहीं होती। इससे उसकी निष्ठा का पता चलता है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** भक्तिन सुख-दुःख में लेखिका का साथ निभाती है और उनकी आवश्यकताओं का आत्मीय ध्यान रखती है। आर्थिक संकट में भी सहयोग की उसकी तत्परता प्रेरक है। आज के स्वार्थपूर्ण जीवन में ऐसी निष्ठा, संवेदना और सेवा संबंधों को भरोसेमंद तथा मानवीय बना सकती हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** भक्तिन की निष्ठा और निःस्वार्थ सेवा आज भी संबंधों में विश्वास, सहानुभूति और सहयोग बढ़ाने की प्रेरणा देती हैं।

**त्वरित सुझाव:** केवल भक्तिन की प्रशंसा न करें; पाठ का एक व्यवहार और आज के जीवन में उसकी उपयोगिता आपस में जोड़ें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के ‘मेरी कल्पना का आदर्श समाज’ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर मनुष्यों की क्षमताओं की भिन्नता को स्वीकार करते हैं और उसके निर्माण के तीन आधार बताते हैं।
- शारीरिक वंशपरंपरा, सामाजिक विरासत तथा व्यक्तिगत प्रयत्न को अलग-अलग पहचानना आवश्यक है।

**चरण 1: तीनों आधार पहचानिए** पहला आधार शारीरिक वंशपरंपरा है। दूसरा आधार सामाजिक विरासत है, जिसमें माता-पिता की देखभाल, शिक्षा और वैज्ञानिक ज्ञान का अर्जन जैसी सुविधाएँ आती हैं। तीसरा आधार मनुष्य का अपना प्रयत्न है। इसलिए क्षमता को केवल जन्म या केवल व्यक्तिगत मेहनत का परिणाम कहना अधूरा होगा।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** आंबेडकर के अनुसार मनुष्य की क्षमता शारीरिक वंशपरंपरा, सामाजिक विरासत और उसके अपने प्रयत्नों पर निर्भर करती है। सामाजिक विरासत में माता-पिता की देखभाल, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञान का अर्जन आदि आते हैं। ये परिस्थितियाँ उसके विकास के अवसरों को प्रभावित करती हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** मनुष्य की क्षमता के तीन आधार हैं: शारीरिक वंशपरंपरा, सामाजिक विरासत और स्वयं किए गए प्रयत्न।

**त्वरित सुझाव:** तीनों आधार क्रम से लिखें और सामाजिक विरासत के साथ देखभाल तथा शिक्षा के उदाहरण जोड़कर उत्तर पूरा करें।

**12(i).** निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी के पारिवारिक मूल्यों तथा आधुनिकता के बीच के संघर्ष को दर्शाते हुए समाज में वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

[5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- मनोहर श्याम जोशी की ‘सिल्वर वैडिंग’ में यशोधर बाबू के परंपरागत संस्कार और परिवार की बदलती जीवनशैली आमने-सामने आते हैं। कहानी पीढ़ियों के बीच संवाद और बुजुर्गों की भावनात्मक आवश्यकताओं पर विचार करती है।
- आलोचनात्मक उत्तर में आधुनिकता को पूरी तरह दोषी मानने के बजाय पारिवारिक स्नेह, सम्मान और सहभागिता की कसौटी पर परखना चाहिए। किशनदा का अकेलापन वरिष्ठ नागरिकों की असुरक्षा का मार्मिक उदाहरण है।

**चरण 1: संघर्ष के प्रसंग और उनका सामाजिक अर्थ पहचानिए** यशोधर बाबू सादगी, बचत और पुराने सामाजिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। बच्चों की भौतिक उपलब्धियाँ और विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक उत्सव उन्हें सहज नहीं लगते। फिर भी परिवार को सर्वथा संवेदनहीन कहना उचित नहीं है; उपहार में दिया गया गाउन स्नेह का संकेत भी है। तनाव तब गहरा होता है जब उनकी इच्छाओं और जीवन-अनुभव को पर्याप्त स्थान नहीं मिलता। किशनदा की अंतिम अवस्था के अकेलेपन को जोड़ने से उत्तर केवल दो पीढ़ियों की रुचियों का अंतर न रहकर बुजुर्गों की गरिमा और भावनात्मक सुरक्षा का विवेचन बन जाता है।

**चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर** ‘सिल्वर वैडिंग’ में यशोधर बाबू सादगी, आत्मीयता और परंपरागत पारिवारिक मूल्यों के पक्षधर हैं, जबकि उनके बच्चे उपभोक्तावादी आधुनिक जीवनशैली अपनाते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आयोजन उनके लिए आनंद के साथ असहजता भी लाता है। बेटे का गाउन प्रेम दर्शाता है, किंतु उन्हें उसके साथ अपने विश्राम की चिंता करने वाला आत्मीय आग्रह चाहिए। किशनदा का अकेलापन बुजुर्गों की उपेक्षा और असुरक्षा उजागर करता है। कहानी बताती है कि आर्थिक सुविधा और उपहार पर्याप्त नहीं हैं। वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान, संवाद, साथ तथा पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी चाहिए। पीढ़ियों के बीच संवेदनशीलता ही आधुनिकता और पारिवारिक मूल्यों में संतुलन स्थापित कर सकती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** कहानी में पीढ़ियों का संघर्ष बुजुर्गों की भावनात्मक उपेक्षा को सामने लाता है। आधुनिक सुविधाओं के साथ आत्मीय संवाद और सम्मान हों, तभी वरिष्ठ नागरिक परिवार में सुरक्षित और सहभागी अनुभव कर सकते हैं।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में वर्षगाँठ, गाउन और किशनदा के अकेलेपन को जोड़ें; फिर वरिष्ठ नागरिकों की सम्मान और संवाद की आवश्यकता स्पष्ट करें।

**12(ii).** निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ कहानी आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत है।’ – कैसे ? उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।

[5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ ‘जूझ’ शिक्षा प्राप्त करने और अपनी प्रतिभा विकसित करने के संघर्ष का चित्रण है। इसमें प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों पर दृढ़ इच्छाशक्ति और परिश्रम की विजय दिखाई देती है।
- प्रेरणात्मक विवेचन में पाठ की ठोस घटनाओं को युवाओं के लिए सीख से जोड़ना चाहिए। केवल मेहनत का सामान्य उपदेश देने के बजाय पढ़ाई की बाधा, सहायक व्यक्तियों और साहित्यिक रुचि का उल्लेख आवश्यक है।

**चरण 1: संघर्ष से प्रेरणा तक उत्तर की रूपरेखा बनाइए** लेखक के पिता चाहते थे कि वह खेती में काम करे; इससे उसकी पढ़ाई बाधित हुई। लेखक ने शिक्षा की इच्छा नहीं छोड़ी और दत्ता जी राव की सहायता से फिर विद्यालय जाने का अवसर पाया। खेत के काम और पढ़ाई के बीच संतुलन बैठाना उसकी लगन का प्रमाण है। सौंदर्यपूर्ण मास्टर की कविता पढ़ाने की शैली ने उसकी काव्यरुचि विकसित की। इस तरह पाठ युवाओं को परिस्थितियों के आगे हार न मानने, उचित सहायता लेने, समय का उपयोग करने और अभ्यास से क्षमता बढ़ाने की प्रेरणा देता है। अंतिम उत्तर में घटना और उससे मिलने वाली सीख को साथ रखिए।

**चरण 2: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर** 'जूझ' आधुनिक युवाओं को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लक्ष्य के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। आनंद के पिता उसे पढ़ाने के बजाय खेत में काम कराना चाहते थे। उसने शिक्षा की इच्छा नहीं छोड़ी और दत्ता जी राव की सहायता से विद्यालय लौटने का अवसर पाया। खेती के काम के साथ पढ़ाई जारी रखकर उसने परिश्रम तथा समय-साधना का उदाहरण प्रस्तुत किया। सौंदलगेकर मास्टर से प्रेरित होकर उसकी कविता में रुचि बढ़ी और वह अभ्यास करने लगा। उसका अनुभव बताता है कि कठिनाइयाँ प्रतिभा के विकास को स्थायी रूप से रोक नहीं सकतीं। दृढ़ संकल्प, उचित मार्गदर्शन और निरंतर अभ्यास से युवा अपना भविष्य सँवार सकते हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** 'जूझ' का संघर्षशील विद्यार्थी युवाओं के लिए प्रेरक है, क्योंकि वह पारिवारिक बाधाओं के बीच भी शिक्षा और रचनात्मक विकास का रास्ता खोजता है। उसकी सफलता लगन, सहयोग और निरंतर अभ्यास का महत्त्व स्थापित करती है।

**त्वरित सुझाव:** पिता की रोक, दत्ता जी राव की सहायता और सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा—इन तीन प्रसंगों को क्रमशः संकल्प, सहयोग और प्रतिभा-विकास से जोड़ें।

**12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :**

**‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ के आधार पर सिंधु घाटी के दौर के व्यापार और खेती व्यवस्था की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।** [5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- ओम थानवी का पाठ सिंधु सभ्यता के आर्थिक जीवन को पुरातात्विक प्रमाणों से समझाता है। व्यापार के साथ उन्नत खेती भी उसकी समृद्धि का आधार थी।
- विवेचना में खेती के उत्पाद और उपकरण तथा व्यापार की वस्तुओं के ठोस उदाहरण देने चाहिए। पाठ में व्यक्त संभावना को निश्चित तथ्य बनाकर नहीं लिखना चाहिए।

**चरण 1: खेती की उन्नति के प्रमाण पहचानें** पहले यह धारणा थी कि सिंधु घाटी के लोग अनाज बाहर से मँगाते थे। नई खोजों ने इसे गलत सिद्ध किया। गेहूँ, जौ, सरसों और चने जैसी उपजों के प्रमाण मिले हैं। खेती में पत्थर और ताँबे के उपकरण काम आते थे। कपास के बीज नहीं मिले, किंतु सूती कपड़ा मिला है; अतः कपास की खेती का प्रमाण बताते समय यही भेद स्पष्ट रखें।

**चरण 2: खेती और व्यापार का संबंध स्पष्ट करें** मुअनजो-दड़ो में सूत की कताई, बुनाई और रंगाई होती थी। रंगाई के कारखाने के अवशेष उत्पादन की विकसित व्यवस्था का उदाहरण हैं। पाठ के अनुसार लिनन और ऊन सुमेर से आयात होते थे तथा सूत के निर्यात की संभावना थी। इस प्रकार कृषि, वस्त्र-निर्माण और बाहरी व्यापार परस्पर जुड़े दिखाई देते हैं। उत्तर में केवल फसलों की सूची देकर व्यापार वाला पक्ष अधूरा न छोड़ें।

**चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर** ‘अतीत में दबे पाँव’ के अनुसार सिंधु घाटी में व्यापार के साथ उन्नत खेती भी होती थी। गेहूँ, जौ, सरसों और चने की उपज के प्रमाण मिले हैं। पत्थर तथा ताँबे के उपकरण खेती में प्रयुक्त होते थे। लोग रबी की फसल लेते थे। कपास के बीज नहीं, किंतु सूती कपड़ा मिला है, जो कपास की खेती का प्रमाण है। मुअनजो-दड़ो में सूत की कताई-बुनाई और रंगाई होती थी; रंगाई का कारखाना भी मिला है। लिनन और ऊन सुमेर से आयात होते थे; संभवतः सूत का निर्यात होता था। ये उदाहरण कृषि, शिल्प और व्यापार की विकसित व्यवस्था दर्शाते हैं।

**चरण 4: निष्कर्ष** सिंधु घाटी की आर्थिक समृद्धि उन्नत कृषि और विकसित व्यापार दोनों पर आधारित थी। फसलों, कृषि-उपकरणों और वस्त्र-उत्पादन के प्रमाण इस व्यवस्था को स्पष्ट करते हैं।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में खेती के लिए फसल और उपकरण, तथा व्यापार के लिए आयात और संभावित निर्यात का उदाहरण दें; सूत के निर्यात को निश्चित तथ्य न बनाएँ।